४

एक तोले अफ़ीम की क़ीमत

(जुलाई १९२९)

पात्र-परिचय

१ मुरारी मोहन बी० ए०—नये विचारों का नवयुवक और लाला सीताराम अफ़ीम के व्यापारी का पुत्र—आयु २१ वर्ष

२ कुमारी विश्व मोहिनी—एनीबेसेंट कालेज में सेकंड ईयर की छात्रा—आयु १८ वर्ष

३ रामदीन—लाला सीताराम का नौकर—आयु ४० वर्ष

४ जोखू—चौकीदार— आयु ५० वर्ष

इस नाटक का सर्व प्रथम अभिनय लक्ष्मी भवन नरसिंहपुर में १५ सितंबर १९४० को श्री चन्द्रप्रकाश वर्मा बी० ए० के निर्देशन में हुआ। भूमिका इस प्रकार थी :

मुरारी मोहन	...	श्री चन्द्र प्रकाश वर्मा बी० ए०
विश्वमोहिनी	...	श्री जगदीशप्रसाद वर्मा
रामदीन	...	श्री रविप्रकाश
जोखू	...	श्री जागेश्वर अग्रवाल

समय—रात के दस बजे के बाद ; लाला सीताराम की दूकान, उसी में एक सजा हुआ कमरा। एक बड़ा टेबुल। उस पर कागज़, क़लम, दावात आदि सुसज्जित हैं। टेबुल के आसपास दो-तीन कुर्सियाँ रखी हुई हैं। बगल में एक बेंच जिस पर कारपेट बिछा हुआ है। दीवाल पर दो-तीन फ़ोटो लगे हुए हैं। जिनमें एक मकान के मालिक सीताराम का और दूसरा उनकी पत्नी का है, जो अब इस संसार में नहीं हैं। दोनों के बीच में श्री लक्ष्मी जी का एक चित्र लगा हुआ है। दाहिनी ओर एक साइनबोर्ड है, जिसमें 'लाला सीताराम-अफीम के व्यापारी' लिखा हुआ है। दीवाल पर कुछ ऊँचाई से एक क्लॉक टँगी हुई है, जिसमें दस बज कर पन्द्रह मिनट हुए हैं। क्लॉक के बग़ल में एक कैलेंडर है।

मुरारीमोहन लाला सीताराम का लड़का है—नये विचारों में पूर्ण रीति से रँगा हुआ। वह इसी वर्ष बी० ए० पास हुआ है। उम्र २१ वर्ष। देखने में सुन्दर। साफ़ क़मीज़ और धोती पहने हुए है। टेबुल पर बिखरे हुए कागज़ ठीक करने के बाद वह कुर्सी पर बैठकर अख़बार देख रहा है। चिन्ता की गहरी रेखाएँ—उसके मुख पर देखी जा सकती हैं। वह किसी समस्या के सुलझाने में व्यस्त मालूम देता है। दो एक

बार अखबार से नज़र उठा कर दीवाल की ओर शून्य में देखने लगता है ।]

मु०—(एक क्षण अखबार की ओर देख कर पुकारते हुए) रामदीन !

रा०—[बाहर से] सरकार ।

[रामदीन का प्रवेश । घुटने तक धोती, गञ्जी और पगड़ी पहने हुए है । बड़ा बातूनी है ! लेकिन है समझदार । आकर नम्रता से खड़ा हो जाता है ।]

मु०—रामदीन ! बाबूजी जाते वक्त कुछ कह गये हैं ?

रा०—[हाथ जोड़ कर] कोई खास बात नाहीं सरकार । कहत रहे कि मुरारी भैया को देखते रहना तकलीफ न हो । नहीं तो रामदीन तुम जानो, ऐसी कहत रहे सरकार ।

मु०—[लापरवाही से] ऐसा कहा ? [हँसकर] हँश्र्, मुझे क्या तकलीफ होगी रामदीन ? कब आने को कहा है ?

रा०—सरकार, परसो साम के कहा है । बहुत जरूरी काम है, नाहीं तो काहे जाते सरकार ?

मु०—परसों आएँगे ? कौन तारीख़ है ? [कैलेंडर कि ओर देखता है ।] १५ जुलाई ! [ठंडी साँस लेकर] खैर ।

रा०—[मुरारी को चिंतित देखकर] सरकार, जल्दी काम खतम होय जाय तो जल्दी आय जाँय । कोई बात है सरकार ?

मु०—[लापरवाही से] कोई बात नहीं । बाबूजी गए किसलिए हैं, तुम्हें मालूम है ?

रा०—[हाथ भुलाकर] ए लो सरकार, आप लोग न जाने ? हम गरीब मनई सरकार के काम को का समझे ? हाँ, कहत रहे कि अफीम अब बढ़ाय गई है। गाजीपुर से नवा कारबार चालू भवा है। यही बरे जाना पड़ गवा।

मु०—मुझसे तो बातें ही न हो सकीं। मैं समझा, किसी से कुछ तय करने के लिए गये हैं। मेरी आजकल कुछ ज्यादा फिकर मालूम होती है।

रा०— काहे न होय सरकार ? अब आपै तो हैं, और कौन है, सरकार ?

मु०—अच्छा [घडी की ओर देखकर] रामदीन ! अब जाओ तुम। दस बज चुके।

रा०—सरकार हमका तो हुकुम है कि यहीं दुकान मे सोना। सरकार !

मु०—नहीं जी, तुम घर जाओ। मैं तो हूँ। मैं कोई बच्चा नहीं हूँ। मैं अकेला ही सोऊँगा। किसी का डर है क्या ? और फिर चौकीदार तो है ही !

रा०—सरकार, नराज होएँगे, सरकार, मै भी यहीं पड़ रहौंगा।

मु०—क्यों, क्या तुम्हारे घर मे कोई नही है ?

रा०—है काहे नाहीं सरकार ? तेजी है, तेजी कै माँ है। ओकरे तबियत सरकार कल्हि से कछु ढिक है।

मु०—तब तो तुमको जाना चाहिये।

रा०—हाँ सरकार, बहुत ढिक है। मुदा बडे सरकार नराज...।

मु०—नहीं, मै कह दूँगा ! यह क्या बात कि घर में लोग बीमार हों और तुम यहीं पड़े रहो।

रा०—[हाथ जोड़कर] वाह, सरकार आप दीन दयालू हैं। काहे न होंय सरकार ? आप तौ दीन की परवस्ती...

मु०— खैर, यह कोई बात नहीं।

रा०—[हाथ जोड़कर] तौ सरकार मैं [रुककर] जाँव ...!

मु०—हाँ, सुबह ज़रा जल्दी आ जाना।

रा०—बहुत अच्छा, सरकार। सरकार की का बात... !

[रामदीन अपना बिस्तरा उठाकर जाने को तैयार होता है।]

मु०—[सोचता हुआ] क्यों जी रामदीन, तुम्हारी शादी कब हुई थी ?

रा०—[संकुचित होता हुआ] हॅ, हॅ. सरकार सादी ? तेज़ी कै माँ की शादी ? सरकार, जमाना गुजर गवा। अब तौ तेजी कै शादी कै फिकर है। सरकार आपई करेंगे। [दाँत निकलता है।]

मु०—अच्छा, बहुत दिन बीत गए ! और रामदीन, तुमने शादी के पहले तेजी की माँ को तो देखा होगा ?

रा०—राम कहो, सरकार, हम तो उहि का तब जाना जब तेजी का जलम होय का वखत आवा। सरकार, भरे घर माँ कौन के का देखत है ? मा-बाप सब्बै तौ रहैं। जब लौं तेजी क माँ से मुलाखात का वखत आवै तब लौ घर में अँधियार हौय जात रहा। और सरकार, आपन मेहरिया का मुँह देखै से का ? देखा तौ ठीक, न देखा तौ

ठीक। जब ऊ का अपनाय लिहिन तब सरकार, भली बुरी सब्बै ठीक है। हैं, हैं।

[नम्रता और हास्य का मिश्रण]

मु०—बड़ा ज्ञानी है। और ये शादी लगाई किसने थी ?

रा०—अब सरकार, बापै लगाईन. हमार काहे माँ गिनती ? ऊ हमसे कहवाइन—सब ठीक है। हम हूँ आपन मुँडिया हलाय दिहिन। सादी के बात तौ सरकार बापै के हाथ मे रहा चाही। ऊ कहिन कै रामदीन कै सादी होई हम समझा ठीक है। तौ सादी न करत ? सरकार।

मु०—तुम लोग क्या समझो कि शादी किसे कहते हैं ?

रा०—सरकार, आप लोग पढे लिखे हन। अब आप न जानी तौ का हम जानी ? हमार सादी तो सरकार, गुजर-बसर के लायक है ! आप लोगन की सरकार 'बिलाडी-बिलाडी भाट' सादी होवत है। अब तौ सरकारौ की सादी होई। हाँ. [सिर हिलाता है।]

मु०—[दृढ़ता से] मेरी शादी नहीं होगी रामदीन.. अच्छा अब जाओ तुम।

रा०—काहे न होई सरकार !

मु०—कुछ नहीं, तुम जाओ।

रा०—सरकार कै सादी तो अस होई कि सगर दुनिया तरफराय जाई। अच्छा तौ सरकार जाई नू ? राम राम [कमरे मे लगी हुई लक्ष्मी जी की तस्वीर को भी प्रणाम करके जाता है।]

मु०—[व्यंग मे] बडा भगत है।

[रामदीन के जाने पर मुरारी कुछ क्षणों तक दरवाज़े की ओर देखता हुआ बैठा रहता है। फिर उठ कर दरवाज़ा ऊपर और नीचे दोनों ओर से बन्द करता है। दो लेम्पों में से एक लेम्प बुझा देता है। कुछ देर सोचता है।]

मु०—अब ठीक है। पीछा छूटा शैतान से। यहीं सोना चाहता था। बाबूजी का मुँह लगा नौकर है न? अब बेखटके अपना काम करूँगा। [सोचता है।] मेरी शादी ··शादी होगी! किसी जंगली जानवर से, अब सह नहीं सकता! बाबूजी सोचते क्यों नहीं कि हम लोगों के पास भी दिल होता है! हम लोग भी हसरत रखते हैं! मालूम हो जायगा कि मैं सच कहता था या मज़ाक करता था। मेरी लाश बतलायगी। ठीक है·····आज आत्महत्या करनी ही होगी, तभी मेरा पीछा छूटेगा·····क़िस्मत की बात कि दुकान की सब अफीम खत्म हो जाय लेकिन क्या मुरारी अपने काम में चूक सकता है? एक तोला अलग निकाल कर रख ही तो ली। [मेज़ के ड्राअर में से अफीम निकालता है।] यह है! मैं ग्रेजुएट हूँ। पिता जी के कहने से मैं अपने 'कल्चर' को 'किल' नहीं कर सकता। 'मैरिज—इज़ एन ईवेन्ट इन लाइफ।' यह गुड़ियों की शादी नहीं है। वे दिन गये जब रामदीन की शादी हुई थी। [सोचता है।] 'इट इज़ बैटर टु किल वन् सेल्फ दैन टु किल वंस सोल।' बहुत 'रिवोल्ट' किया, लेकिन कुछ नहीं। अब सुबह लोग देखेंगे कि मुरारी अपने विचारों का कितना पक्का है। मेरी लाश की शादी करेंगे उसी अनकल्चर्ड लड़की के साथ। ओफ, कितना दर्द है! [अपनी माँ की फोटो की ओर देखकर] माँ, तुम तो

दुनियाँ में नहीं हो, नहीं तो मुमकिन है कि अपने मुरारी को बचा सकतीं, अच्छा तो मैं भी सुबह तक तुम्हारे पास पहुँचता हूँ। तो अब......[सोचता है।] खा जाऊँ ? [कुर्सी पर बैठ कर अफ़ीम की पुड़िया खोलता है। थोड़ी देर सोचता है।] नहीं बेंच पर लेटकर खाना अच्छा होगा। लोग समझेंगे कि मैं सो रहा हूँ। जगाने की कोशिश करेंगे। मज़ा आयगा। लेकिन मुझे क्या !! [बेंच पर लेटता है और गोली हाथ में ऊपर उठाता है।] मुरारी, तुम भी अपने विचारों के कितने पक्के हो ! अपने सिद्धातों के लिए ज़िन्दगी को ठोकर मार दी ! अब खा जाऊँ ? वन् ..टू [उठकर] अरे। मैंने पत्र तो लिखा ही नहीं। मेरे मरने के बाद मुमकिन है पुलिसवाले बाबू जी को तंग करें...। करने दो, मुझे भी तो उन्होंने तग किया है। [सोचकर] लेकिन नहीं, मरने के बाद भी क्या दुश्मनी ! अच्छा लिख दूँ [अफ़ीम की गोली को मेज़ पर रखकर बैठता है और पत्र लिखता है। पढ़ता है।] 'बाबूजी, आप एक गँवार लड़की से मेरी शादी करने जा रहे हैं। मैंने बहुत विरोध किया लेकिन आप अपना इरादा नहीं बदल रहे हैं। मैं अपने सिद्धातों की हत्या नहीं कर सकता, अपनी ही हत्या कर रहा हूँ। आपका आदेश तो स्वीकार नहीं कर सका, आप की अफीम अवश्य स्वीकार कर रहा हूँ। क्षमा कीजिए। मुरारी मोहन।' बस, ठीक है। इसी टेबुल पर लैटर छोड़ दूँ। अब चलूँ अपना काम करूँ ? [अफ़ीम की गोली मेज़ पर से उठाता है। उसकी ओर देखते हुए] मेरी अमृत की गोली अफ़ीम ! ए स्कारलेट फ़ेयरी आव् ड्रीम्स !! तेरे व्यापार ने विदेशों में धन बरसा दिया है। आज तेरा यह

व्यापार ! मुझ पर मौत बरसा दे। होमर ने तेरी तारीफ की है। ट्रॉय की सुन्दरी हेलेन ने मेनीलास की शराब में तुझे ही तो मिलाया था। अब तू मेरे ख़ून मे मिल जा। बस, दुनिया ! तुझे मेरा आख़िरी सलाम !! आगे से प्रेम की कीमत समझ ! चलूँ···? [हाथ उठाकर] चियरियो ! [बेंच पर लेट जाता है, खटका होता है। मुरारी चौंक कर उठता है।] कौन ? [कोने की ओर देखता हुआ] ये चूहे शैतान किसी को मरने भी नहीं देते। ये क्या समझें कि स्यूसाइड कितनी सीरियस चीज़ है। अच्छा शान्त ! मुरारी अब जा रहा है। [फिर लेट जाता है] वन्...टू... [सोचकर] क्या मैं कुछ डर रहा हूँ ? डर रहा हूँ ? लेकिन मुझे मरना ही होगा। मुझे मरना ही होगा। दरवाज़े पर खट्खट् की आवाज़ होती है। मुरारी उठकर] कौन है ? रामदीन ? [फिर खट्खट् की आवाज़ होती है।] अरे ! बोलता क्यों नहीं ? [फिर खट्खट् की आवाज़] जा, मैं नहीं खोलूँगा [फिर खट्खट् की आवाज़] खोलना ही पड़ेगा ! [अफ़ीम की गोली और ख़त उठाकर मेज़ की दराज़ में रखता है।] ठहर। [मुरारी दरवाज़ा खोलता है। आश्चर्य से] अच्छा, आप कौन ! आइये।

[एक अठारह वर्षीया लड़की का प्रवेश। नाम है विश्व मोहिनी। अस्त-व्यस्त वेषभूषा जैसे—दौड़कर आ रही है। देखने में अत्यन्त सुन्दर। बाल कुछ बिखर कर सामने आ गये हैं। सिर से साड़ी सरक गई है। वस्त्रों में कालेज की 'ध्वनि' है। उद्भ्रान्त-सी है।]

मु०—आप कौन हैं !

वि०—लाला सीताराम जी कहाँ हैं ?

मु०—बाहर गये हुए हैं।

वि०—बाहर गए हुए हैं ? (सोचते हुए कुछ धीरे) अच्छा है, वे नहीं हैं !

मु०—(दुहराते हुए) अच्छा है, वे नहीं हैं ? क्या मतलब ?

वि०—कुछ नहीं।

मु०—किस काम से आप आई हुई हैं ?

वि०—मुझे कुछ अफीम चाहिये।

मु०—आपको ? क्यों ?

वि०—ज़रूरत है। बहुत ज़रूरत है।

मु०—दुःख है, सारी अफीम ख़त्म हो गई। बाबूजी उसी के लिए ग़ाज़ीपुर गये हुए हैं।

वि०—कब तक लौटकर आएँगे ?

मु०—परसों।

वि०—परसों ? बहुत देर हो जायगी। (अनुनय के स्वरों में) थोड़ी भी नहीं है ? कुछ तो ज़रूर होगी। मुझे बहुत ज़रूरत है।

मु०—इस समय ? आधी रात को ?

वि०—हाँ, मेरी माताजी बीमार हैं। अफीम खाती हैं। उनकी सारी अफीम ख़त्म हो गई है। उन्हें नींद नहीं आ रही है। नींद न आने से उनकी तबीयत और भी ख़राब हो जायेगी।

मु०—मुझे बहुत दुःख है, लेकिन अफीम तो नहीं है।

वि०—[प्रार्थना से] देखिये, आपकी मुझ पर बड़ी कृपा होगी

यदि आप खोज कर थोड़ी सी दे दें। इतनी बड़ी दुकान में क्या थोड़ी सी भी अफीम न होगी ?

मु०—[सोचते हुए] अच्छा, बैठिये खोजता हूँ। [मेज़ का दराज़ खोलता है, दराज़ की ओर देखते हुए] आपका परिचय ?

वि०—[कुर्सी पर बैठते हुए] परिचय और अफीम से क्या संबन्ध ?

मु०—आपका नाम लिखना होगा। अफ़ीम देते वक्त नाम लिखना होता है।

वि०—अच्छा, नाम लिखना होगा ? [कुछ ठहर कर] तो फिर मुझे नहीं चाहिये।

मु०—इसमें डरने की क्या बात है ? अरे, आप तो अपनी माता जी के लिए ले जा रही हैं। [दराज़ बन्द करता है।]

वि०—[सँभल कर] हाँ; हाँ, मैं उन्हीं के लिए ले जा रही हूँ। लेकिन रहने दीजिए, मैं फिर मँगवा लूँगी।

मु०—लेकिन आप तो कह रही हैं कि आपकी माता जी को अभी अफीम चाहिये। बिना इसके उन्हें नींद ही न आयगी।

वि०—हाँ, नींद नहीं आयगी। ख़ैर, लिख लीजिये मेरा नाम। [धीरे से] फिर मुझे चिन्ता किस बात की ?

मु०—क्या कहा आपने ?

वि०—कुछ नहीं।

मु०—क्या नाम है आपका ?

वि०—विश्वमोहिनी।

मु०—[एक कागज़ पर लिखते हुए] नाम तो बहुत सुन्दर है ! क्या आप पढ़ती हैं ?

वि०—जी हाँ, एनी बेसेंट कालेज मे सेकंड इयर में पढ़ती हूँ ।

मु०—[लिखता है ।] अच्छा, आपके पिता जी ?

वि०—कुछ और बतलाने की जरूरत नहीं है । आपके पिताजी मेरे पिताजी को अच्छी तरह जानते हैं । आप दीजिए अफीम, मुझे जल्दी ही चाहिये । माँ की तबीयत ख़राब है । देर हो रही है ।

मु०—अच्छा, तो कितनी चाहिए ?

वि०—इससे मालूम होता है कि अफीम काफी है । यही एक तोला बहुत होगी ।······हाँ, एक तोला । [सोचती है ।]

मु—एक तोले का क्या कीजिएगा ? [आलमारी खोलता है ।]

वि०—क्या एक तोले से कम में काम चल जायगा ?

मु०—आप की बातें कुछ समझ में नहीं आ रही हैं ।

वि०—अच्छा, तो एक तोला ही दे दीजिए ।

मू०—शायद मेरे पास एक ही तोला है । मुझे भी उसकी कुछ ज़रूरत है। पर मालूम होता है 'दाई नीड इज़ ग्रेटर दैन माइन' । अच्छा तो लीजिए । [आल्मारी से निकाल कर पुड़िया में एक गोली देता है । आल्मारी बन्द करता है ।]

वि०—[शीघ्रता से लेकर] धन्यवाद, एक ही तोला है ? कितने की हुई ?

मु०—यों ही ले लीजिए, आपसे कुछ न लूँगा ।

वि०—नहीं ऐसा नहीं हो सकता ।

मु०—आपने रात में इतनी तकलीफ की है। फिर आपकी माँ की तबीयत ख़राब है, उनके लिए चाहिये। आप से कुछ न लूँगा।

वि०—[टेबुल पर एक रुपया रखते हुए] मैं अपने ऊपर ऋण नहीं छोड़ सकती।

मु०—आप यह क्या कह रही हैं ?

[विश्वमोहिनी एक क्षण में वह गोली खा लेती है। मुरारी हाथ से रोकने की व्यर्थ चेष्टा करता है। विश्वमोहिनी गिरना चाहती है। मुरारी सँम्हाल कर बेंच पर लिटाता है। स्वयं पास की कुर्सी पर बैठ जाता है।]

मु०—[व्यग्रता से] यह क्या किया ?

वि०—[शिथिलता से] आत्म-हत्या !

मु०—अरे तो मेरे यहाँ क्यों ?

वि०—[शांति से] आप पर कोई आँच न आएगी। मैंने पत्र लिख कर रख छोड़ा है। [एक पत्र निकाल कर देती है।] घर में मरने की जगह नहीं है। इतने लोग भरे हैं। चौबीस घण्टों का साथ। डाक्टर बुलवाकर वे लोग मुझे मरने न देते। इसलिए आपके यहाँ आना पड़ा।

मु०—मैं भी तो डाक्टर बुलवा सकता हूँ ?

वि०—ओह, ईश्वर के लिए—मेरे लिए—मत बुलवाइये ! मत बुलवाइये !!

मु०—[लापरवाही से] न बुलवाऊँ ? आपका यह पत्र पढ़ सकता हूँ ? [विश्वमोहिनी आँखों से स्वीकृति देती है।]

मु०—[पत्र पढ़ता है ।] 'पिता जी ! धृष्टता क्षमा कीजिये। मेरे विवाह के लिए आपको अपनी सारी ज़मींदारी बेचनी पड़ती। ६०००) आप कहाँ से लाते ? आप तो भिखारी हो जाते । इससे अच्छा यही है कि मैं भगवान् की शरण में जाऊँ । अब आप निश्चित हो जाइए । आह, यदि मेरे बलिदान से हिन्दू समाज की आँखें खुल सकतीं ! आपकी, विश्वमोहनी ।' ओह, [गहरी साँस लेकर] कितनी भयानक बात !

वि०—क्षमा कीजिये । लेकिन मेरी मृत्यु की आवश्यकता थी । हिन्दू समाज बहुत भूखा है । [कुछ रुककर] ओह, आप कितने कृपालु हैं । मेरी अन्तिम इच्छा आपने पूरी की । मेरी आपसे एक और प्रार्थना है ।

मु०—बतलाइये ।

वि०—आपका विवाह हो गया ?

मु०—जी नहीं ।

वि०—तो सुनिये, जब आप विवाह करें तो अपने विवाह में दहेज़ का एक पैसा न लें । किसी बालिका के पिता को भिखारी न बनावें । आप मेरी प्रार्थना मानेंगे ? मेरी अन्तिम प्रार्थना मानेंगे ?

मु०—मानूँगा, ज़रूर मानूँगा ।

वि०—ओह, आप कितने अच्छे हैं ! मैं अपने प्रथम और अन्तिम मित्र का नाम जान सकती हूँ ?

मु०—धन्यवाद ? मेरा नाम मुरारी मोहन है ।

वि०—कितना अच्छा नाम है! मुरारी मोहन...मुरारी मोहन......विवाह मे एक पैसा न लेना, मुरारी मोहन!

मु०—लेकिन मै विवाह करना ही नही चाहता।

वि०—क्यों?

मु०—[सोचता है।] जब आपने अपना सारा रहस्य मेरे सामने खोल दिया है तब अपनी बात कहने में मुझे भी क्या संकोच? देखिये, पिताजी मेरा विवाह एक बेपढ़ी और गॅवार लड़की से करना चाहते हैं।

वि०—अपने पिताजी को आप समझा नहीं सकते?

मु०—पिताजी समझना ही नहीं चाहते। इसीसे मैं भी आज ही—अभी ही—आत्म-हत्या करने जा रहा था। इसी बैंच पर जिस पर आप लेटी हैं।

वि—[चौंक्कर] तो मैं···?

मु०—[बीच ही में] मैं तो मरने जा ही रहा था कि आप आ गईं।

वि०—आत्म-हत्या न करना मुरारी मोहन! मैं ही अकेली काफी हूँ। [कुछ रुक कर] लेकिन अफीम, अफ़ीम का कुछ असर मुझे मालूम नही पड़ रहा अभी तक?

मु०—तो जल्दी क्या है?

वि०—मैं जल्दी मरना चाहती हूँ। अफीम का असर क्यों नहीं हो रहा?

मु०—न होने दीजिए।

वि०—अफीम खाऊँ और उसका असर न हो ?

मु०—[लापरवाही से] असर क्यों होगा ? आपने अफीम खाई ही कहाँ हैं ?

वि—[चौंक कर] नहीं ? अरे ! तो क्या आपने मुझे अफीम नहीं दी ?

मु०—नहीं। मैं जानता था कि आप आत्म-हत्या करने जा रही हैं। मैं ऐसे को अफीम क्यों देता ? मैंने नहीं दी।

वि०—[विस्फारित नेत्रों से] तो फिर क्या दिया ? [उठकर बैठ जाती है।]

मु०—काली हर्र की एक गोली। [आल्मारी की ओर सकेत करता हुआ क्रीड़ा पूर्वक] बाबू जी की दवाओं की आल्मारी से।

वि०—[किंचित क्रोध से] आप बड़े वैसे हैं ! आप मेरा अपमान करना चाहते हैं ? मै मरना ही चाहती हूँ। मुझे अफीम चाहिये।

मु०—[जैसे बात सुनी ही नहीं] अफीम के बदले हर्र की गोली ! ज़रा मेरी सूझ तो देखिये !

वि०—रखिये अपने पास आप अपनी सूझ। इस समय शहर की सब दूकाने बन्द हो गई हैं नहीं तो मैं आपकी अफीम की परवा भी न करती।

मु०—तो न करें।

वि०—लेकिन मुझे अफ़ीम चाहिए।

मु०—[खड़े होकर] देखिए ! सिर्फ़ एक तोला अफ़ीम बाक़ी है जो दराज़ में रखी हुई है। [दराज़ की ओर संकेत] अगर मैं वह आपको दे दूँ तो फिर मैं ['मैं' पर ज़ोर] आत्म-हत्या किस चीज़ से करूँगा ?

वि०—आप ? आप आत्म-हत्या नहीं कर सकते। मैं करूँगी।

मु०—नहीं मैं करूँगा।

वि०—यह हो ही नहीं सकता। आपकी परिस्थितियाँ सुधर सकती हैं, मेरी नहीं।

मु०—नहीं आपकी परिस्थितियाँ सुधर सकती हैं, मेरी नहीं। उठाइये, अपना यह रुपया।

वि०—नहीं, दीजिये मुझे अफीम।

मु०—नहीं दूँगा।

वि०—नहीं देंगे तो मैं······

मु०—क्या करेंगी आप ?

वि०—[मुट्ठी बाँधते हुए विवशता से] ओह, मैं क्या करूँ ? [उठकर दराज़ खोलना चाहती है।]

मु०—[रोकते हुए] मुझे माफ कीजिये। ज़रा आप अपने को सँम्हालिये। 'हैव पेशेन्स गुड गर्ल।' सब मामला सुलझ जाएगा।

वि०—कैसे ? [बैठती है।] नहीं सुलझ सकता। संसार स्वार्थी है, पापी है। नहीं।

मु०—सारा संसार स्वार्थी नहीं है, पापी नहीं है। शान्त हो देखिये। उठाइये, अपना यह रुपया।

वि०—अच्छा, आप आत्म-हत्या तो न करेंगे ?

मु०—तो क्या करूँ ?

वि०—मैं क्या जानूँ ?

मु०—[विश्वमोहिनी की आँखे पढ़कर कुछ देर रुक कर] 'एक्स-क्यूज़ मी, आई टच्ड युअर बॉडी !'

वि०—ओ ! इट् वाज़ माई फ़ाल्ट !

मु०—दैट्स आल राइट। आपने क्या बतलाया ? आप सेकंड इयर में पढ़ती हैं ? [विश्वमोहनी सिर हिलाकर स्वीकार करती है।]

मु०—तो आप एक काम कर सकती हैं। आपके पिता जी मेरे पिता जी को जानते ही हैं। उनके द्वारा मेरे पिता जी से कहला दें कि अगर मैंने कभी शादी की तो मैं बिना दहेज़ के करूँगा। यदि ऐसा न होगा तो इस समय तो नहीं उस समय अवश्य आत्म-हत्या कर लूँगा।

वि०—अवश्य। मुझे विश्वास है कि मेरे पिता जी का कहना आपके पिताजी ज़रूर मान जायँगे। नहीं तो उनको ऐसी घटनाएँ देखने के लिए तैयार रहना चाहिये।

मु०—अच्छा तो उठाइये, अपना यह रुपया। हर की गोली की क्या क़ीमत ?

वि०—[रुपया उठाकर] अच्छा लीजिये। [सोचती है।] अच्छा यह बतलाइये कि आपको यह कैसे मालूम हुआ कि मैं आत्म-हत्या करने के लिए अफीम ले रही हूँ। मैंने तो अपनी माँ की बीमारी की ही बात कही थी।

मु०—मैं जानता था। आपकी उखड़ी-उखड़ी-सी बातें। नाम देने से इन्कार करना। वग़ैरह, वग़ैरह। कुछ इस ढङ्ग से आपने कहा कि मुझे शक हो गया। अफीम खाने के लिए अनुभव की ज़रूरत है। कच्चा आदमी खा ही नहीं सकता, मैं जानता हूँ। मैंने आपको हर्र की गोली दे दी, आपने ले ली। अफीम और हर्र मे कोई तमीज़ ही नहीं।

वि०—और आपको वक्त पर हर्र की गोली मिल भी गई!

मु०—मिलती क्यों न? आत्म-हत्या करने वालों से कभी कभी ईश्वर भी डर जाता है। [हास्य]

वि०—[विनोद से] आप बड़े वैसे हैं।

मु०—कैसे ?

वि०—मुरारी मोहन जैसे।

मु०—अच्छा, आपको मेरा नाम याद है?

वि०—अपने नाम को भूल जाऊँ, लेकिन आपके नाम को नही भूल सकती। आपने इतना बड़ा उपकार जो किया है। अच्छा देखिये, मैं अपने पिताजी से कहकर आपके पिताजी को समझा दूँगी।

मु०—क्या?

वि०—कि वे आपकी शादी किसी पढी-लिखी लड़की के साथ करेंगे।

मु०—[रहस्य दृष्टि से देखता है।]

वि०—जाइए, आप बहुत बुरे हैं।

[चौकीदार की आवाज़ सड़क पर होती है—'जागते रहो।']

मु०—चौकीदार कह रहा है—जागते रहो। और कितनी देर जागते रहें ? ग्यारह तो बज गए होंगे।

वि०—[मुस्कुरा कर] जीवन भर—

मु०—जीवन ! कितना बड़ा जीवन ! दुःख दर्द से भरा हुआ। पढ़ने की चिन्ता, कमाने की चिन्ता, स्त्री की चिन्ता, प्रेम की चिन्ता · [चौंककर] ओह, मै कहाँ की बात ले बैठा। हाँ, मैं आपको मकान भिजवा दूँ।

वि०—चली जाऊँगी। नौकरनी को बाहर बरामदे में छोड़ आई हूँ।

मु०—शायद इसलिए कि आपकी आत्म-हत्या की खबर लेकर घर जाती।

वि०—हाँ, लेकिन जैसा मैंने कहा—आप पर आँच न आती। उसकी गवाही और मेरा पत्र आपको निरपराध ही साबित करते।

मु०—तो क्या आपकी नौकरनी को मालूम था कि आप आत्म-हत्या करने जा रही हैं ?

वि०—बिलकुल नहीं। लेकिन वह यह कह सकती कि मैं यहाँ अपने मन से आई थी। आप तो निरपराध ही रहते। यही साबित होता।

मु०—धन्यवाद। अब क्या साबित होगा ?

वि०—यही आप इतने कृपालु हैं ··

मु०—[बीच ही में] कि आधी रात तक किसी को रोक सकता हूँ। अच्छा ठहरिये। मैं इन्तजाम करता हूँ। [पुकारता है।] चौकीदार !

चौ०—[बाहर से] आया हुज़ूर !

वि०—चौकीदार को क्यों पुकार रहे हैं।

मु०—आपको गिरफ़्तार करने के लिए, पुलिस में ख़बर भेजना है। आप आत्म-हत्या करना चाहती थीं।

वि०—बुलवाइये पुलिस को। मैं भी आपको गिरफ़्तार करा दूँगी। आप भी आत्म-हत्या करना चाहते थे। अफीम आपके पास है या मेरे पास !

मु०—मेरी तो अफीम की दूकान ही है। साइनबोर्ड देख लीजिए [साइनबोर्ड की तरफ इशारा करता है।]—लाला सीताराम—अफीम के व्यापारी [चौकीदार का प्रवेश।]

चौ०—[सलाम करता है।] कहिये हुज़ूर !

मु०—जोखू ! पहरा देने के लिए तुम आ गये ?

चौ०—हाँ, हुज़ूर। ग्यारह बज गये।

मु०—देखो, इन्हें इनके घर पहुँचा दो। ये अपना घर बतला देंगी। बाहर बरामदे में इनकी नौकरनी होगी। उसे भी लेते जाना। आज दावत में कुछ देर हो गई।

चौ०—बहुत अच्छा, हुज़ूर ! [सलाम करता है।]

वि०—मैं ख़ुद चली जाऊँगी।

मु०—ओ, मुझे ख़ुद साथ चलना चाहिए।

वि०—(लज्जित हो) मेरा मकान थोड़ी ही दूर है। आपको ज़्यादा तकलीफ न होगी।

मु०—कुछ तकलीफों में आराम ही मिलता है। जोखू! तुम जाओ।

चौ०—हुज़ूर! एक बात है।

मु०—क्या?

चौ०—हुज़ूर! पहरा देते देते थक जाता हूँ। कुछ अफीम हो तो मिल जाय।

मु०—कितनी चाहिये?

चौ०—हुज़ूर जितनी दे दें।

मु०—एक तोला भर है।

चौ०—[ख़ुश होकर] क्या कहना हुज़ूर! एक हफ़्ते तक चंगा हो जाऊँ।

मु०—[मेज़ की दराज़ खोल अफ़ीम निकाल कर देते हुए] अच्छा लो, होशियारी से पहरा देना।

चौ०—[सलाम करता है।] अब हुज़ूर मैं अकेला सारे शहर का पहरा दे सकता हूँ। [बाहर जाता है।]

वि०—इसका नाम नहीं लिखा?

मु०—दूकान का पहरेदार है। जाना-पहचाना हुआ आदमी, फिर नाम तो बड़े आदमियों के लिखे जाते हैं।

वि०—क्योंकि वे ही ज्यादातर आत्म-हत्या करने की बात सोचते हैं।

मु०—[लज्जित हो कर] जाने दीजिये, इन बातों को। [गहरी साँस लेकर] चलो, पीछा छूटा अफीम से। छोटी-सी चीज़, पर कितना बड़ा असर? सिर्फ, एक तोला अफीम!

वि०—[मुस्कुराकर] और उसकी भी क़ीमत नहीं मिली।

मु०—मिली न! बहुत मिली, आप मिल गईं?

[विश्वमोहिनी प्रसन्नता में लज्जा मिला देती है। दोनों जाने को प्रस्तुत हैं। परदा गिरता है।]